

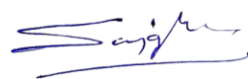
सत्र 2027–28 नियमित/स्वाध्यायी
राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)
दो वर्षीय पाठ्यक्रम

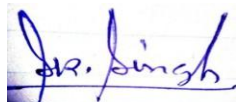
Marking Scheme
Diploma in Performing Arts (D.P.A.)
(HINDUSTANI CLASSICAL MUSIC) VOCAL/INSTRUMENTAL
(Non-Percussion)
Two Year Diploma Course

PAPER	SUBJECT- VOCAL/INSTRUMENTAL (NON PERCUSSION)	MAX	MIN
1	Theory - Applied principles of music	100	33
2	PRACTICAL- Raga description viva	100	33
	GRAND TOTAL	200	66

 Anamika Dixit





 Dr. Singh

DIPLOMA IN PERFORMING ARTS (D.P.A.)
(HINDUSTANI CLASSICAL MUSIC)
VOCAL/INSTRUMENTAL
(NON-PERCUSSION)

TWO YEAR DIPLOMA COURSE- PREVIOUS

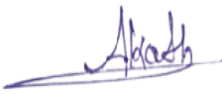
सत्र 2027-28 नियमित / स्वाध्यायी
सैद्धांतिक-प्रथम प्रश्नपत्र

समय : 3 घण्टे

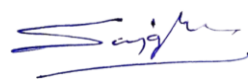
पूर्णांक :- 100

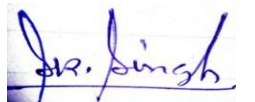
न्यूनतम :- 33

1. ध्वनि (सांगीतिक ध्वनि और शोर), नाद और उसके प्रकार, नाद की तीव्रता, तारता।
2. हिन्दुस्तानी और कनार्टक स्वर सप्तकों का अध्ययन। ग्रह आदि दस राग लक्षणों का परिचय।
3. थाट, राग वर्गीकरण का सामान्य परिचय। शुद्ध, छायालग एवं संकीर्ण रागों का अध्ययन।
4. पं. विष्णु दिगंबर पलुस्कर स्वरलिपि पद्धति की जानकारी।
5. पाठ्यक्रम के निम्नलिखित रागों का शास्त्रीय परिचय एवं पिछले पाठ्यक्रम के रागों के साथ तुलनात्मक अध्ययन :-राग-छायानट, जयजयवंती, बसंत, कामोद, शंकरा, देशकार, बहार, कालिंगडा, सोहनी।
6. निम्नलिखित अ एवं ब को भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति में लिखने का अभ्यास।
(अ) पाठ्यक्रम के रागों में विलम्बित रचना (बड़ा ख्याल), मसीत खानी गत को आलाप तानों सहित लिखने का अभ्यास। किसी ध्रुपद अथवा धमार को दुगुन, चौगुन सहित लिखना अथवा किसी तराने को लिखने का अभ्यास।
(ब) पाठ्यक्रम के रागों में से मध्यलय रचना (छोटा ख्याल), रजाखानी गत को स्वरताल लिपि में लिखने का अभ्यास। (आलाप, तानों सहित।)
(स) किसी भजन अथवा धुन को तालस्वर लिपि में लिखना।
10. पाठ्यक्रम के निम्नलिखित रागों का शास्त्रीय परिचय एवं पिछले पाठ्यक्रम के रागों के साथ तुलनात्मक अध्ययन :-राग-छायानट, जयजयवंती, बसंत, कामोद, शंकरा, देशकार, बहार, कालिंगडा, सोहनी।
11. आड़, कुआड़, बिआड़, की परिभाषा एवं अर्थ। तीनताल, दादरा, कहरवा, झपताल, एकताल के ठेकों को दुगुन, तिगुन, चौगुन की लयकारी में लिखने का अभ्यास।
12. जीवन परिचय एवं सांगीतिक योगदान :-सदारंग-अदारंग,, उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ, डॉ. एन. राजम, पं. ओमकार नाथ ठाकुर।
13. सितार वाद्य पर दोनों हाथों के संयोजन से (बोल एवं स्वर) विभिन्न छंदों का अभ्यास

 Anamika Dixit







सत्र 2027-28 नियमित/स्वाध्यायी
DIPLOMA IN PERFORMING ARTS (D.P.A.)
(HINDUSTANI CLASSICAL MUSIC) VOCAL/INSTRUMENTAL
(NON-PERCUSSION)
II YEAR DIPLOMA COURSE
प्रायोगिक :- 1 प्रदर्शन एवं मौखिक

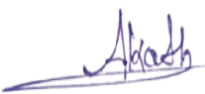
समय : 3 घण्टे

पूर्णांक - 100
न्यूनतम - 33

1. पूर्व पाठ्यक्रमों की पुनरावृत्ति एवं पाठ्यक्रम के राग : छायाणट, जयजयवंती, बसंत, कामोद, शंकरा, देशकार, बहार, कालिंगडा एवं सोहिनी।
2. पाठ्यक्रम के रागों में स्वरमालिका एवं लक्षणगीत का गायन। (गायन के परीक्षार्थियों के लिये।)
3. पाठ्यक्रम के रागों में विलम्बित रचना (बड़ा ख्याल), विलम्बित गत (मसीतखानी) का आलाप तानों सहित प्रदर्शन।
4. पाठ्यक्रम के 7 रागों में मध्यलय रचना (छोटा ख्याल), मध्य लय गत (रजाखानी) का तानों सहित प्रदर्शन।
5. पाठ्यक्रम के किसी एक राग में ध्रुपद अथवा धमार (दुगनु, तिगुन, चौगुन सहित प्रदर्शन।) दो तराने एवं एक भजन की प्रस्तुति। (गायन के परीक्षार्थियों के लिये।) अपने वाद्य पर तीन ताल के अतिरिक्त अन्य किसी ताल में दो गतों का प्रदर्शन तानों सहित। किसी धुन का प्रदर्शन (वाद्य के परीक्षार्थियों के लिये)।
6. पाठ्यक्रम के तालों का हाथ से ताली देकर ठाह, दुगनु, तिगुन, चौगुन सहित प्रदर्शन।

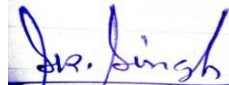
संदर्भ ग्रंथ:

- | | | |
|---|---|---------------------------|
| 1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 | — | पं. विष्णुनारायण भातखण्डे |
| 2. संगीत प्रवीण दर्शिका | — | श्री एल. एन. गुणे |
| 3. संगीत शास्त्र दर्पण | — | श्री शांतिगोवर्धन |
| 4. संगीत विशारद | — | श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग |
| 5. सितार मालिका | — | श्रीभगवतशरण शर्मा |
| 6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 | — | पं. श्री रामाश्रय झा |
| 7. संगीतबोध | — | श्री शरदचन्द्र परांजपे |
| 8. संगीत वाद्य | — | श्री लालमणि मिश्र |
| 9. हमारे संगीत रत्न | — | श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग |

 Anamika Dixit





 Mr. Singh